स्वाइन फ्लू से बचने के लिए क्या हम अंग्रेजों की गुलामी छोड़ सकते हैं?

हमको आजादी मिले 70 साल हो गए हैं, पर ऐसा लगता है कि अभी भी हम अंग्रेजों की गुलामी से बाहर निकल नहीं पाये हैं। इंग्लेण्ड और यूरोप के ठंडे प्रदेशों में लोग अपने हाथों को गर्म बनाए रखने के लिए अपने कोट की जेब में रखते हैं और इसीलिए जब किसी से मिलते हैं, तो गर्मजोशी से हाथ मिलाते हैं। यह प्रथा अंग्रेजों ने गुलामी के समय में डाल दी थी। परन्तु आजादी के बाद हम आज भी जब किसी से मिलते हैं, तब हाथ मिलाकर बहुत खुश होते हैं।

भारत की संस्कृति में नमस्कार करना सिखाया है। जब दोनों हाथों को जोड़ते हैं, तो हमारे शरीर की पॉजिटिव और नेगेटिव एनर्जी एक होकर हमारे शरीर में उचित रक्त संचार को प्रोत्साहित करती है। हममें एक नई ऊर्जा भर जाती है। इसके साथ ही सामने वाले का भी उचित आदर सम्मान हो जाता है। इससे एक-दूसरे व्यक्ति को इंफेक्शन फैलने की संभावना भी नहीं रहती है। आजकल स्वाईन फ्लू फैलने का जमाना आ गया है, जिसमें यह इंफेक्शन हाथ मिलाने से फैलता है। यदि कोई आदमी टॉयलेट होकर आता है, तो कोई जरूरी नहीं कि उसके हाथ धुले हुए ही हों और जब गंदे हाथों से हाथ मिलाने पर हमारी पॉजिटिव ऊर्जा उसके पास चली जाती है और उसकी नेगेटिविटी हमारे शरीर में आ जाती है, तब हम बीमार पड़ जाते हैं। भारत वैसे भी एक गर्म देश है और यहाँ पर हाथ मिलाकर गर्मजोशी दिखाना बिल्कुल आवश्यक नहीं है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप भारतीय संस्कृति के अनुसार दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन या नमस्कार करें। हाथ मिलाकर अंग्रेजों की गुलामी नहीं करें।

आचार्य सत्यनारायण पाटोदिया